DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION INITIATIVE

Imprint

DITF BULLETIN

वर्ष-2 | अंक-15 | मार्च-2022

OUR MOTTO
Sharing is Caring

Amalgamation of Learning
kaleidoscope of thoughts and vision

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION

Get The Latest Scoop
ON THIS MONTH'S TRENDS

MARCH EDITION

संपादक
डॉ. तरुणा दाधीच

फाउंडर प्रेसिडेंट
देवेश दाधीच

प्रकाशक
शोभा दाधीच

E-mail- dadheech@ditfindia.org

DADHEECH INTERNATIONAL
TRADE FOUNDATION

सम्पादकीय आलेख

साहस,संघर्ष और विजय का माह : मार्च

आलेख का विषय पढ़कर मन में विचार कौंध रहा होगा कि कौन सा संघर्ष और विजय जिसके बारे में बात की जाने वाली है? यूं तो जीवन ही संघर्ष है पर जीवन के इन संघर्षों के बाद विजय का स्वाद बड़ा अनूठा और अद्वितीय होता है। विद्यार्थी वर्ग अपनी परीक्षाओं हेतु तैयार है।वहीं 8 मार्च को 'विश्व महिला दिवस' मनाने जा रहे हैं। 23 मार्च को देश के शहीदों के साहस और संघर्ष की कहानी को कहता 'शहीद दिवस' मनाया जाएगा। त्योहारों की श्रृंखला भी 20 मार्च से आरंभ हो रही है। उत्साह और जोश से भरा यह माह बहुत अद्भुत है। पूरे सत्र का परिणाम परीक्षा - कक्ष के प्रदर्शन पर टिका है। परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थी परीक्षा का तनाव ना लें। आत्मविश्वास और दृढता ही सफलता का सूत्र है। महिला दिवस का आयोजन कर श्रेष्ठ पायदानों पर आरूढ़ महिला वर्ग को सम्मानित किया जाना नारी शक्ति में उत्साह का संचार करता है। बुलेटिन में भी हमारे दाधीच परिवार की विभिन्न आयामों को रचती नारी शक्तियों का परिचय करवाया जा रहा है। देश की स्वतंत्रता की नींव बने अमर शहीदों को स्मरण करने हेतु डीआईटीएफ उनकी पुण्यतिथि पर ऑनलाईन 'अखिल भारतीय कवि सम्मेलन' का आयोजन करने जा रहा है। जो साथी इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहते हैं वे अपना वीडियो और परिचयभेज सकते हैं।आपकी प्रतिभा प्रदर्शन हेतु इस श्रेष्ठ मंच पर आप आमंत्रित हैं। शिवरात्रि,होली और भी अन्य त्योहार हृदय को रंग-बिरंगा स्पंदन देते हैं। तो आइए मार्च माह की गतिविधियों में उपस्थिति दर्ज कराएं। एक महत्वपूर्ण सूचना है कि आप परिजन 'जॉय ऑफ गिविंग' का अनुभव करें और श्रेष्ठकाम के लिए डीआईटीएफ के साथ भागीदार बनें। हम सब मिलकर बदलाव ला सकते हैं। डीआईटीएफ को दिया गया आर्थिक सहयोग आयकर अधिनियम के तहत 80जी आयकर मुक्त रहेगा।

शुभम् भवतु।।

संपादक की कलम से.....

डॉ.तरुणा दाधीच
मुख्य संपादक

SUBSCRIBE TO OUR VIDEOS ON YouTube

डीआईटीएफ के यू-ट्यूब चैनल को सब्सक्राइब कर आप सभी कार्यक्रम देख सकते हैं।

DADHEECH INTERNATIONAL TRADE FOUNDATION

Experience Joy of Giving

& be a Partner with DITF for a Noble Cause.

Together we can bring a change.

Donations to DITF are entitled to 80G exemption under Income Tax Act.

SCAN & PAY

महिला शक्ति

हमें अपार हर्ष है कि हमारे दाधीच परिवार की नारी शक्तियां देश-विदेश में उच्च पदों पर आसीन होकर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहीं हैं।
यहां कुछ मातृशक्ति का परिचय संभव हो पाया है ।

डॉ.गरिमा दायमा

आपका जन्म राजस्थान के बूँदी जिले में हुआ।

विवाहोपरांत आप पूणे में निवास करती हैं। वनस्थली विद्यापीठ से पीएचडी (म्यूजिक) करने के पश्चात आप विविध मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर चूकी है। यूनिवर्सिटी और महाविद्यालयों में आप सेवाएं प्रदान कर रही हैं। वर्तमान में आप जर्मनी में रहकर भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण दे रही हैं। आप अपने परिवार के साथ सम्पूर्ण दाधीच परिवार का नाम गौरवान्वित कर रही हैं।

परीक्षा का महत्व

हर व्यक्ति के जीवन में परीक्षा देने का अवसर जरूर आता है और उस परीक्षा में व्यक्ति कितना सफल और असफल होता है ,यह उसकी काबिलियत और मेहनत पर निर्भर करता है ।आज हम सभी को इस दुनिया में सफल होने के लिए हर जगह परीक्षा देनी पड़ती है । जीवन के लगभग हर क्षेत्र में हम परीक्षाओं का सामना करते हैं । अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है । परीक्षा हमें हमारी कमी और हमारी ताकत के बारे में बताती है । यह एक ऐसे मित्र की तरह है,जो हमें सच्चाई का आईना दिखाता है,यदि परीक्षाओं का अस्तित्व ना होता तो शायद जिंदगी में आगे बढ़ना बहुत कष्टदायक होता । हम शिक्षित करके दुनिया को बदल सकते हैं ।जैसे बिना जड़ के वृक्ष कुछ भी नहीं है वैसे ही बिना परीक्षा के शिक्षा। हर बच्चे की सीखने की शैली और गति अलग होती है । प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है ना केवल सीखने में सक्षम है बल्कि सफल होने में भी सक्षम है। छात्रों की समझने की क्षमता का अंदाजा उनके वैचारिक ज्ञान की मदद से लगाया जा सकता है । इस कोविड-19 महामारी ने हमें हर परिस्थिति में सीखने और सिखाने का मौका दिया है भले ही परीक्षाएँ रद्द की गई हो हमें यह जागरूकता पैदा करने की जरूरत है कि प्रत्येक परीक्षा महत्वपूर्ण है और यह एक सतत प्रक्रिया है जिससे एक बच्चे को पूरे जीवन गुजरना पड़ता है।

अतः पूर्ण परिश्रम से सफलता प्राप्त करने की और ध्यान दें।
शुभकामनाओं के साथ....

-उमा शर्मा,
अध्यापिका, भीलवाड़ा

नाव खेरी

-स्नेह प्रभा शर्मा
(ElkGrove California USA)

मैंने मेरी नाव खेरी ।
रुख न मेरा मोड़ सकी ।
तेज लहरें घेरती चली ॥
नाव मेरी रोक, न टोक सकी ।
हवाएँ लहरों की ॥
रुख़ न मेरा मोड सकी ।
लहरें समन्दर की ॥
मैंने मेरी नाव खेरी ।
जीवन कागज की नाव है मेरी ।
जिसमें आशा ने दी है फेरी ॥
मैंने मेरी है नाव खेरी !
किनारे तक पहुँच पाई हूँ।
दुआ है तेरी ॥
मैंने मेरी नाव खेरी ॥

Socio-Economic Development of Dadhich Community Across Generations: A Case Study of Village Hariyadhana

-Dr. C.L. Dadhich

(He is a Former Director of Research, Reserve Bank of India, Honorary Secretary of Indian Society of Agricultural Economics and Editor, Indian Journal of Agricultural Economics.)

Village Hariyadhana is a tiny village in Jodhpur district situated on the border of three districts, viz., Jodhpur, Pali and Nagaur. As a result, villagers have socio-economic linkages with the three districts. In order to ensure smooth socio-relations Dadhich Community of the surrounding 17 villages in the radius of 15 km formed an association locally known as 17 Khedas (K17). Similar associations were formed in other villages such as K 44, K12. Normally marriage relations were taking place in own Kheda, however relations in other Khedas were accepted but these were far and few.

The main objective of this paper is to capitulate the socio-economic development of Dadhich Community of this village over a period of 150 years (1870 to 2020) comprising five generations and identify the factors influencing these developments. An attempt has been also made to offer suggestions to ensure smooth socio-economic developments. The study area being my own native village, facilitated me to collect hassle free information. Apart from the discussions with the knowledgeable persons, records of the Raoji were also compiled. Raoji is a community engaged in keeping the records of all the persons of the Kheda for generations after generations right from the first Dadhich family settled in this village. I have seen the records relating to my last 10 generations. However, the reference period of this study was limited to 5 generations (1870 to 2020) to have the benefit of my acquaintance, i.e., 2 generations above me and two generations below me.

Hariyada in 1870

Hariyadhana village was named in the memory of Hariya. Raika who searched out a well while grazing his sheep and dhanan is a home of Hariya, so it is Hariyadhana. The village has a population of 300 households belonging to all the 36 committees, Brahmans (priest teachers, astrologers Purohits), Rajputs. (the ruling community responsible for providing security and civil and revenue administrations), Mahajans the rural traders and moneylenders and farmers mostly Jats and Gujjars and others the service providers including Goldsmith, Blacksmith Tailors, Teli Potters, Weavers, Cobblers, Dhoti, Chokidars, (watchman). This was self-sustainable compact village. There were no roads, people were travelling to foot. Rich and old people were using bullock cart or camel cart. Barring the house of the Jagirdars there were kachha

houses (wall with stone but roofs were with wooden locally known as patts) no schools, no hospital, no post office.

Hariyadhana in 2020

Now the village is well connected by a pucca road with Jodhpur (district headquarters) and Jaipur (state capital. The frequency of the buses is almost on the hourly basis. The distance of Jodhpur is covered in two to three hours. There are large number of motor bikes in the village. Few households have jeeps or cars. Village has been electrified in 1970 and there is piped water supply in almost every house. Village roads are pucca. A large number of houses have flush utrines. There is a higher secondary school with 300 students but only with arts as optional subjects, no commerce or science. There are also three Government primary schools in hamlets of the village. There are as many as three English medium private schools as well. There is an Ayurveda hospital.

Among the 36 Viradari (communities) of the village, Dadhich community has been a major force to reckon with. There were about 40 Dadhich households in the village in 1870 belonging to Ratawa (29), Gotecha (7), Gagaraniya (4). Barring few families Ratawas were mainly dependent on agriculture while Gotecha were purohits of Rajaputs and Gagaraniya were purohits of Khoja jats and agriculture is their secondary occupation. Number of households of Dadhich community remained by and large constant because of migration on the one hand and growth of population on the other.

Identification of generations is a cumbersome process as different generations have different time zones. However, to get a broad picture, generations have been classified into five categories. First generation consists of those born between 1870 and 1900. Second generation refers to those born between 1901 and 1930. The third generation represents those born between 1931 to 1960. The fourth generation includes those born between 1961 to 1990 and fifth generation covers the period between 1991 and 2020.

First Generation

During this time zone getting a match for a male was very difficult. Those having a sister or close relation may get proposal from other side in the similar situation. This system was known as Amasama or atasata. The clear proposals were rarest of the rare. Marriage party used to go on bullock carts. Majority of the households were engaged in agriculture. Few households had a subsidiary occupation of Jajmani (a family priest). Those having Jajmani were the preferred as grooms. However, households solely dependent on agriculture had a risk of not getting a match at all in the absence of a matching sister. About 4 per cent of males remained unmarried. Marriages were taking place within 17 Kheda and such relations were decided during the Nayat, which was held on the death of an elderly persons in the family. All the girls of the family were wedded on convenient day later on irrespective of age of girls. Droughts famine were very common phenomenon. Households were required to move with animals to Malawa during the off seasons in times of droughts. In view of these hardships about 20 per cent households migrated to other states either to Madhya Pradesh or Maharashtra in search of employment. Majority of these families are mostly engaged in petty businesses now.

Second Generation

This generation registered a little improvement. As a result of population growth despite migration of 8 households the number of households increased to 50. However, about 15 or 30 per cent of head of the households got jobs in railways or Ayurveda departments or education department. The

generosity of Asopa brothers, respected late Shri Jhumalalji Asopa and Narnaryanji Asopa deserve special mention. Similarly, late Professor Rameshwarlal Dadhich also helped few Dadhich families to get jobs in village post office. This had a favourable impact on their marriage market. Some of these people got wedded without Amasama. Few of them were able to pay bride price known as Reet in local language. Consequently, the incidence of remaining unmarried declined to 2 per cent of males. However, still Amasama was very common among households engaged in solely agriculture. As a result of their posting outside the Kheda some of the people got married outside the Kheda. Majority of these families migrated to cities for jobs ultimately settled there and sold their properties in due course.

Third Generation

This generation, both at the village and those moved outside the village did exceedingly better because of availability of schools. Incidentally primary schools were set up in the village in 1950 and on completing primary education, most of the boys were moving to other places or at their relative's place or at the community hostels organized by some philanthropists like Shri Jhumalalji Asopa and his team. Over a period, majority of them had a pensionable job as a teacher, army man, conductors or booking clerks in state roadways. Life became opulent and very comfortable. Agriculture turn additional source of income at times through rent seeking. Marriages took place without Amasama or bride price. Few got dowry as well. The wards of some of those moved earlier to cities and rich elite Dadhichs had plum jobs as a Professor, Accounts Officers, Managers, Bankers. At the same time, wards of those who moved to cities as a peon or class IV did not do well. They ended up as rickshaw puller or class IV only. In other words, moving to cities at middle level had paid rich dividends. No attention was paid on girl's education. Kheda and Nayat system out lived its importance and became the relic of past. Third generation was forward looking and completely eliminating social evil of mosar (the death ceremony) in Hariyadhana village. The family planning was in vogue similarly child marriage and marriage of all the girls of family at one go were also not reported at all.

Fourth Generation

This generation displayed a mixed picture. Those moved in cities fared extremely well as MBAs, MBBS, Engineers, CEO ITC experts having sinecure positions like Presidents of MNCs, Central Services like Indian Engineering services Professors, Advocates, Scientists so on and so forth. Equal importance was given on the girl's education. The social mixing and co-education in the absence of reasonable control of family led to number of social evils like late marriage, divorce, nuclear family (dismantle of joint family system) and marriages without consent of parents, instances of drinking were also reported. This apart value system among some of the youths is gradually declining due to interaction with other communities having different value system.

Nonetheless, barring few, those living at village could not do well particularly the males flock, while girls had done exceedingly well. Males could not acquire the required qualifications to make them eligible for jobs. The enhanced competition and reservations added fuel to the fire. Although they are still number of land owners but not pursuing agriculture anymore. Marriage market is very tight. Those having a sister may get a similar match but at times higher education of girls has been a discouraging factor. Overall there is a clear rural-urban divide in Dadhich community of village Hariyadhana. Kheda system and Nayats system have re-emerged to decide the marriage proposal.

Fifth Generation

The fifth generation is awaiting the blooming but picture is not rosy particularly at village level. Marriage market for unemployed rural youths further aggravated. Marriage brokers are very active and arranging match at an exorbitant bride price ranging from 3 to 4 lakhs from other states like Uttar Pradesh, Chhattisgarh, Madhya Pradesh, Orissa. Incidentally, in some villages, qualified Dadhich youth such as BCS, Engineers, etc., having lucrative jobs in India and abroad are in demand as a bridegroom. This may enlarge disparities in rural society in general and Dadhich community in particular. The reservation under EWS scheme has protected the interest of some of Dadhich youths for getting entry in IIT or medical colleges. Nevertheless, those who moved to the cities have a bright future.

Way Forward

The foregoing analysis brings to the fore that these moved in cities and in the middle level have fared well and future appears to be bright. Entry at lower level in the absence of a good company, proper guidance has brought about discouraging results. The most crucial factor contributing to success is education. Indeed, education is a lioness milk. Those who drink may have a roaring success in the life with assured future. Education of those at village will be possible only if cost effective community based hostel facility is ensured at the nearby education centre. Unfortunately, Dadhich Hostel at Jodhpur had contributed a lot in this regard, unfortunately it is no longer in existence. Visionaries and social workers particularly those moved from villages in recent years should pay attention to this and work for this earnestly, without further delay to ensure inclusive growth of the community. This apart the proper guidance and motivation of village youths is equally important. Another factor contributing to success is sanskar (value system) leading to good character and morale behavior, the system of community hostel will go a long way in ensuring moral education and sanskar. The third factor is element of co-operation in the Society. Higher the co-operation, smooth and inclusive is growth trajectory. The institution of community hostel instills co-operation among the community fellows. Needless to say philanthropists or visionaries of community have played most crucial role and worked as catalyst. It is high time that those moved to cities and occupied higher position to revisit their roots and work for the betterment of their brethren. Needless to say teaching of sanskar and value system may go a long way in eradication of social evils and restore value system in youth.

It is interesting to note that almost similar situation has been noticed not only of Dadhich community at other villages but other communities in this part of the country. The community hostels like Dadhich Hostel, Kisan Hostel, Teja Hostel, Karni Hostel, Kemkhani Hostel, Chopasani boarding school, etc., have played significant role in socio-economic development of Western Rajasthan.

महिला शक्ति

प्रोफेसर रीना दाधीच

आप कंप्यूटर साइंस एवं इनफॉर्मेटिक्स विभाग (पोस्ट ग्रैजुएट स्टडीज), यूनिवर्सिटी ऑफ कोटा की डीन हैं ।आप का 21 वर्ष का शिक्षण अनुभव तथा 14 वर्ष का रिसर्च का अनुभव है । आपका रिसर्च क्षेत्र 'Wireless Ad-Hoc Networks , wireless sensor networks and software testing है। आप अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कांफ्रेंस की एवं रिसर्च पत्रिकाओं की सलाहकार व संपादक रही है ।यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान ,सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान , वर्धमान यूनिवर्सिटी कोटा, वनस्थली विद्यापीठ , कोटा यूनिवर्सिटी जयपुर , बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी लखनऊ एवं भारत सरकार की अनेक संस्थानों में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं । आप समाज को प्रतिष्ठा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं । युवाओं को संदेश : लक्ष्य प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान तथा मंजिल तक पहुंचने के बाद कभी भी यह नहीं भूले कि आपने जो भी किया है अथवा सफलता प्राप्त की है उसमें आपकी स्वयं की मेहनत व भाग्य के अतिरिक्त आपके माता-पिता व परिजनों का सहयोग , आशीर्वाद तथा ईश्वर की कृपा बहुत महत्वपूर्ण रही है। आज मैं अपनी बात कहूं तो यह बात 100 प्रतिशत सही है कि मुझे मेरे माता-पिता तथा दादी जी ने सदैव प्रेरित किया है । विवाह के पश्चात सास- ससुर और पतिदेव का साथ मिला और आज भी मिल रहा है। बिना पारिवारिक सहयोग के मंजिल का सफर सुगम नहीं होता क्योंकि मैं कंप्यूटर साइंस की स्कॉलर हूँ तो वर्तमान में बढ़ रहे साइबर क्राइम्स के बारे में छोटी सी बात सभी से करना चाहती हूँ कि इंटरनेट का प्रयोग सोच समझकर करें। बिना किसी कारण से किसी भी लिंक को नहीं खोलें । शॉर्ट में कृपया S T C स्टॉप, थिंक, क्लिक को फॉलो करें अर्थात् रुको, सोचो और क्लिक करो। धन्यवाद।

छोटी-छोटी आदतों से हो सकता है बडा बदलाव

-भावना एस.बिसावा
धूले ,महाराष्ट्र

जीवन में श्रेष्ठता छोटी-छोटी आदतों से आती है ।जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए आपको बहुत बडे प्रयास करने के बजाय छोटी-छोटी आदतों को जीवन में शामील करना होगा | आज के समय में प्रत्येक व्यक्तत अपना बेस्ट देना चाहता हैऔर कुछ अलग करना चाहता है। इसके लिए वह कोशिश भी करता है लेकिन फिर भी वह अपने आपको दबाव में पाता है। यह धीरे-धीरे तनाव का रूप लेता है। अपना श्रेष्ठ देने के लिए हमें अपनी छोटी-छोटी आदतों पर ध्यान देना होगा क्योंकि बदलाव के लिए बडी नहीं,छोटी-छोटी आदतें जिम्मेदार होती हैं। कोई भी बदलव या नई आदत को अपनाना ऐसा ही होता है जैसे किसी नए देश में ऐसी भाषा को सीखना जो आपको आती ही न हो। उस नई भाषा को सीखने के लिए हमें छोटे-छोटे शब्दों से दोस्ती करनी पडती है। ऐसे ही अपने आपको बदलने के लिए अपनी छोटी-छोटी आदतों पर आपको ध्यान देना होगा।

ताजा हवा से दोस्ती

यह ऐसी आदत है जो पूरे बदन के लिए ताजा रखेगी। आपको सिर्फ 30 मिनट रोज घूमने के लिए देने है और यह शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा को बढाएगा , जो दिनभर आपको चुस्त रखेगी। जब शरीर सक्रिय रहता है तो दिमाग को पूरा मौका मिलता है । कि वह आपके लिए कुछ नया सोचे। इस वक्त दिमाग आपको कुछ विचार या अच्छी सलाह भी देता है। जितने भी सफल लोग हैं, उनकी सफलता में इस आदत का बडा योगदान है।

दिन आपके हाथ में है

जल्दी उठने का एक और फायदा कि आप अपने दिन की प्राथमिकताओं को तय कर सकते हैं। इस काम के लिए आपको सिर्फ 10 मिनट का समय देना है। आप अपने महत्वपूर्ण कार्यों की सूची बनाएँ, जो आप आज करना चाहते हैं। यह सूची कार्यस्थल और व्यक्तिगत दोनों के लिए बहुत जरूरी है। ध्यान रहे कि अपनी टू डू लिस्ट की बजाय मस्ट टू लिस्ट पर ध्यान दें। इससे आपको काम का किसी तरह का तनाव नहीं होगा।

कुछ सीखने की बारी

दिमाग के मामले में एक कहावत है कि या तो उपयोग में किया फिर खत्म करो यानी यदि हम कुछ नया नहीं सीखेंगे तो निश्चित रूप से दिमाग की क्षमता कम

होगी। इसलिए रोज 45 मिनट कुछ नया और अच्छी किताबें पढ` की कोशिश करें। स्वयं के विकास के लिए या अपनी दक्षता में सुधार के लिए कोई नई भाषा सीखें। कुछ ऐसा सीखने की कोशिश करें, जो आपके व्यक्तिगत और प्रोफेशनल स्तर को ऊपर उठाए।

खुद से जुडा

प्रत्येक शाम कुछ समय खुद के साथ जरूर गुजारें। यह सिर्फ आपका वक्त हो। इस वक्त शांति और एकांत जगह पर बैठें और आँखें बंदकर अपनी साँसों को महसूस करें। ऐसा दस मिनट तक करें। इसके बाद व्यक्तिगत डायरी में आज की मुख्य बातों को लिखें। आज आपने तय सीखा, किन कायों की वजह से आप अच्छा महसूस करेंगे, क्या सुधार करना है ,क्या नए विचार आए। इस तरह ध्यान करने और लिखने से हमें जींदगी के बारे में स्पष्टता होगी।

समय में से दो घंटों की बचत

आपका दिन कितना ही व्यस्त क्यों न हो, यदि आप सुबह पाँच बजे उठ गए तो यकीन करे आप अपने लिए कम से कम दो घंटे बचा लेंगे। आपको सिर्फ अलार्म की पहली घंटी बजने पर ऐसे उठना है जैसे आज आपका स्पेशल दिन हो। याद रहे वह पहला मिनट बहुत महतवपूर्ण है। उस वक्त आपने अलार्म बंद कर दिया तो आशंका बढ जाएगी कि आप न उठें। सुबह जल्दी उठने से आप उन कुछ गिने-चुने लोगों में शामिल हो जाएंगे जो अपने बदलाव के लिए प्रयास कर रहे हैं और बाकी लोगों से अलग हैं।

पांच छोटी, पर बहुत सहजता से अपनाई जाने वाली आदतें जिनको करने के लिए आपको रोज 100 मिनट देने हैं। ये आदतें आपके जीवन में धीरे-धीरे इतना बडा बदलाव कर देंगी जो अभी तक सिर्फ हमने सपनों में देखा है। ये पांच आदतें छोटी जरूर है पर ये ही ऐसी आदतें है जो साधारण और श्रेष्ठ जीवन में अंतर करती हैं। इनको अपनाने मात्र से आप वहाँ जा सकते हैं,जहाँ जाना सिर्फ अभी तक सपनों में था। इन्हीं आदतों की वजह से आप अपने आपको उत्साहित और प्रेरित रख सकते हैं।

महाशिवरात्रि के 10 ज्योतिषीय उपाय, अथाह धन के लिए जरूर आजमाएं

महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव अर्द्धरात्रि में ब्रह्मा जी के अंश से लिंग रूप में प्रकट हुए थे। इस दिन विधि-विधान से भगवान भोलेनाथ का पूजा-अर्चन किया जाए तो सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। यह मान्यता है कि इसी दिन भोलेनाथ का गौरा माता से विवाह हुआ था।

महाशिवरात्रि के दिन शिव जी को प्रसन्न करने के लिए ज्योतिष के निम्न 10 उपायों को करने से जातक को अथाह धन की प्राप्ति होती हैं।

1) महाशिवरात्रि के दिन योग्य ब्राह्मण से सलाह करके घर में पारद के शिवलिंग की स्थापना करवाएं तथा प्रतिदिन उसका पूजन करें, इससे आमदनी बढ़ने के योग बनते हैं।

2) शिवरात्रि पर 21 बिल्व पत्रों पर चंदन से 'ॐ नमः शिवाय' लिखकर शिवलिंग पर चढ़ाएं। इससे इच्छाएं पूरी हो सकती हैं।

3) एक लोटे में काले तिल पानी में मिलाकर शिवलिंग का अभिषेक करें व 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र का जप करें। इससे मन को शांति तथा पितृ प्रसन्न होकर अपार धन प्राप्ति का आशीर्वाद देंगे।

4) महाशिवरात्रि के दिन जूही के फूल से भगवान शिव का पूजन करें तो घर से दरिद्रता दूर भाग जाती है।

5) शिवरात्रि के कनेर के पुष्पों से भगवान भोलेनाथ का पूजन करने से मनचाहा धनलाभ पाने का आशीष मिलता है।

6) मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं। इस दौरान भगवान शिव का ध्यान करते रहें। इससे धन की प्राप्ति होती है।

7) शिवरात्रि के दिन गरीबों, असहाय व्यक्तियों को भोजन कराएं। इससे घर में कभी अन्न एवं धन की कमी नहीं होगी और पितरों की आत्मा को शांति मिलेगी।

8) शिव जी के पूजन से श्रद्धालुओं की धन संबंधी समस्याएं भी दूर हो जाती हैं। नियमित रूप से अपनाने वाले व्यक्ति को अपार धन-संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

9) शमी वृक्ष के पत्तों तथा चमेली के फूल से शिव जी का पूजन करने पर अपार धन-संपदा का आशीष मिलता है।

10) महाशिवरात्रि पर सायंकाल के समय शिव मंदिर में दीया जलाने से धन संबंधी समस्याएं दूर होकर अपार धन-संपत्ति तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं।

गांव भी अब गांव नहीं रहा।

-रामगोपाल आचार्य
राजसमंद, राजस्थान

परिस्थितियां सितम ढा गई
हवा कुछ शहर की आ गई।
प्रेम प्यार का भाव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

जुड़ती नहीं है अब चौपाल
गीत जिसमें सुर है न ताल।
हां जलता अलाव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

आ गया है तेरे-मेरे का भाव
धनबल बाहुबल का प्रभाव।
सच कहे तो न्याव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

जब से पड़ने लगे यहां वोट,
खा गये ये गांव की चरनोट,
निश्छल सा बर्ताव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

सियासत गांव में अटक रही
गायें इधर-उधर भटक रही।
पहले सा धूप-छांव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

कौन पूछता गरीब का हाल,
शाह मात की चल रहे चाल।
अखाड़ों का दाव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

नहीं कंचे,भंवरें,दड़ी का मेल,
बढ़ गया है क्रिकेट का खेल।
मानवता का प्रभाव नहीं रहा,
गांव भी अब गांव नहीं रहा।

अपना देश

-अंकिता कुदाल
सी.ए.फाइनल ,उदयपुर

तकनीक भले ही कम हो,
पर अपनापन कहीं ज्यादा होता है।
आख़िर अपना देश तो अपना ही होता है,
पिज्जा, पास्ता भले ही वहां का फेमस होता है,
पर मां के एक चम्मच ज्यादा घी से,

स्वादिष्ट भला कौन सा व्यंजन होता है?
होती होगी भले ही वहां पर higher salary,
पर नही मिलती खर्च करने के लिए यारों की टोली,
और वहां हम किससे कहे कि आज हमने भी नई गाड़ी ले ली
कहीं भी जाओ दिल का एक कोना तो यहीं रहता हैं,
आख़िर अपना देश तो अपना ही होता हैं।

घड़ी क्यों पहनें ?

DEEPAK TIWARII
Nuumerovastu Expert

दोस्तों आपका स्वागत है, सबसे पहले आपका बहुत–बहुत धन्यवाद, आपकी दुआओं, प्यार, प्रेम लिए, गर्दन झुकाकर, आभार।

मेरा आपसे वादा है कि जो भी मेरे पास नम्बरों ओर वास्तु का ज्ञान है, इस पत्रिका के माध्यम से आपके पास जरूर पहुंचाउंगा। आपके जीवन में कुछ खुशियां, कुछ **Upliftment** जो मेरे से संभव होगा, मैं पुरा–पुरा **Input** देने की कोशिश करूंगा।

आज का जो विषय है, बहुत ही बढिया अलग सोच **(Out of the Box)** है। जो आपने कभी सोचा भी नही होगा, सुना भी नही होगा, क्या छोटी–छोटी चीजें हमें जीवन में प्रभावित करती है। हॉ, मैं हमेशा कहता हूॅ कि जीवन के छोटे–छोटे प्रयास से ही लक्ष्य पूरे होते है। छोटे प्रयत्न ही जीवन सफल हो सकते है। उससे बडी **(Achievement)** उपलब्धि हो सकती है।

आज मैं आपको बताना चाहता हूॅ कि हमें हाथघड़ी पहननी चाहिए ? नहीं पहननी चाहिए ? किस प्रकार की पहननी चाहिए ? पहनने से क्या फायदे ? और न पहनने से क्या नुकसान ? इसके पिछे के क्या सिद्धान्त है ? क्या **(Logic)** तर्क है ? क्या विज्ञान है ? वो मैं आपके साथ साझा करने वाला हूॅ।

क्या आपने कभी सोचा है कि घड़ी पहनने से क्या फायदे हो सकते है ? विचित्र सी बात है कि जबसे हमारे हाथ में मोबाईल आ गये है, हमने घड़ी पहनना ही बंद कर दिया गया है। अब मैं आपसे कहता हूॅ कि घड़ी जरूर पहननी चाहिए। किस प्रकार की पहननी चाहिए, और क्या उससे फायदे होगें ? यह आजमा कर देख लिजिये, और मैं हमेशा कहता हूॅ कि ''हाथ कंगन को आरसी क्या, पढे–लिखें को फारसी क्या'' आप आजमा कर देख लिजिये, मुझे शत्प्रतिशत विश्वास है कि आपके जीवन में बदलाव व अच्छे फायदे होगें।

सबसे पहले आपसे निवेदन करता हूॅ कि घडी जरूर पहनें। जब भी घडी पहनें किसी भी हाथ में पहनें। साधारणतया उल्टे हाथ में पहनते है। जब भी आप घडी पहने, चमडे, रेगजीन व रबर के पट्टे वाली नहीं पहनें, जब भी घडी पहनें या तो गोल्डन कलर या गोल्डन सिलवर कलर मेटल चेन वाली ही पहनें, केवल सिल्वर कलर मेंटल वाली घडी भी कभी भी नही पहननी चाहिए।

तर्क हमारे बुर्जूग हमेशा कहते थे और यह सत्य है कि आपका वक्त साथ लेकर चले, अगर वक्त साथ लेकर चलना है तो घडी जरूर पहनें।

रबर व चमडे वाली क्यों ना पहने यह सिद्धान्त बताता हूँ– घडी एक ऐसी चीज है जो सपूर्ण शरीर पर निर्जीव नहीं है, **Lifeless** नहीं है, उसके अन्दर एनर्जी है। घडी के अन्दर बैटरी है और घडी हमेशा टीक–टीक चलती है, पूरा वक्त चलती रहती है, आपके शरीर पर जो भी पहना हुआ है, वह **Lifeless** है, सिर्फ और सिर्फ घडी ही है, जो चल रही है, और घडी जब चल रही है तो रबर और चमडा बेल्ट डाल देते है तो उसका करन्ट एनर्जी को **Insulate** (अवरोधक) करता है। रबर और चमडे की बेल्ट के कारण घडी की एनर्जी सही दिशा में प्रसारित **(Circulate)** नहीं होती है। अगर आप घडी के साथ मेटल की चेन पहनेगें तो क्या होगा कि उसका मेटल **Trust App** है जो घडी की एनर्जी का **Conductor** का काम करेगा। जब वो **Conductor** का काम करता है तो मेटल चेन घडी की पूरी एनर्जी को, पूरी शरीर के साथ **Cell** के साथ **Gel** करती है। जिससे आपका एनर्जी लेवल अच्छा होता है।

अगर आपका एनर्जी लेवल अच्छा होता है तो आपका अवसर और संबंध सुरक्षा में सुधार **(Opportunity Sector & Relationship Sector Improve)** हो जाता है। अगर घडी पहनने से आपको रिश्ते और अवसर अच्छे बन जाते है, घडी पहनने में हर्ज क्या।

आप मेरे कहने पर सिर्फ 6–माह तक मैटल चेन वाली घडी पहनना शुरू किजिए, और आप मुझे रिपोर्ट दिजिए, क्या आपके जीवन में अवसर बढे है, जो अवसर आपके जीवन में आते–आते रूक जाते थे, वह अवसर बढने शुरू हो गये है। आपका रिश्ते अच्छे होने लगेगे, ग्राहक, पति–पत्नि, समाज, घर–परिवार आदि में।

मैं शत्प्रतिशत कहता हूँ कि आप जीवन में उतार कर देखें। आज के लिए धन्यवाद। इसी तरह बहुत ही वैज्ञानिक और बहुत ही **Logical Numerology** आपके साथ साझा करता रहूंगा। अगली बार नये विषय के साथ .....

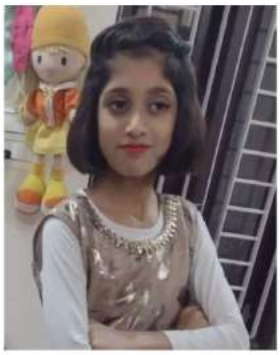

Sketches by- Dharvi sharma

Std of 6th Class